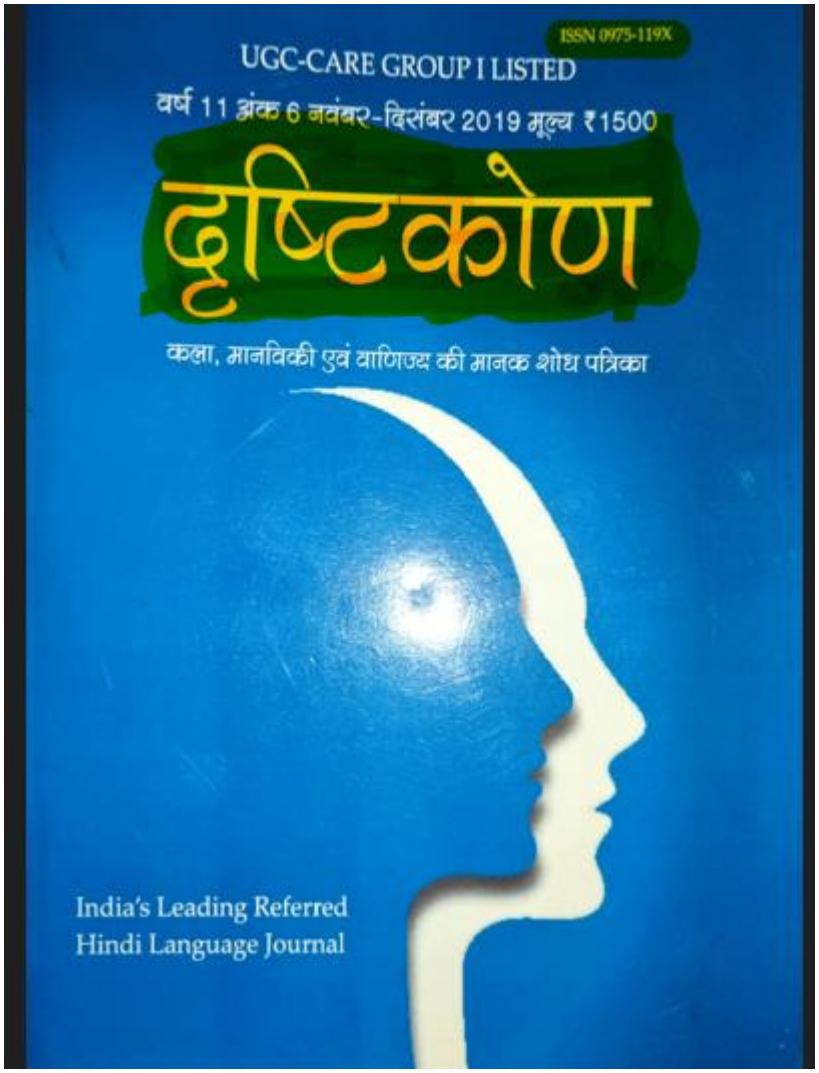
ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 11 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2019 मूल्य ₹1500
दृष्टिकोण
कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका
India's Leading Referred
Hindi Language Journal

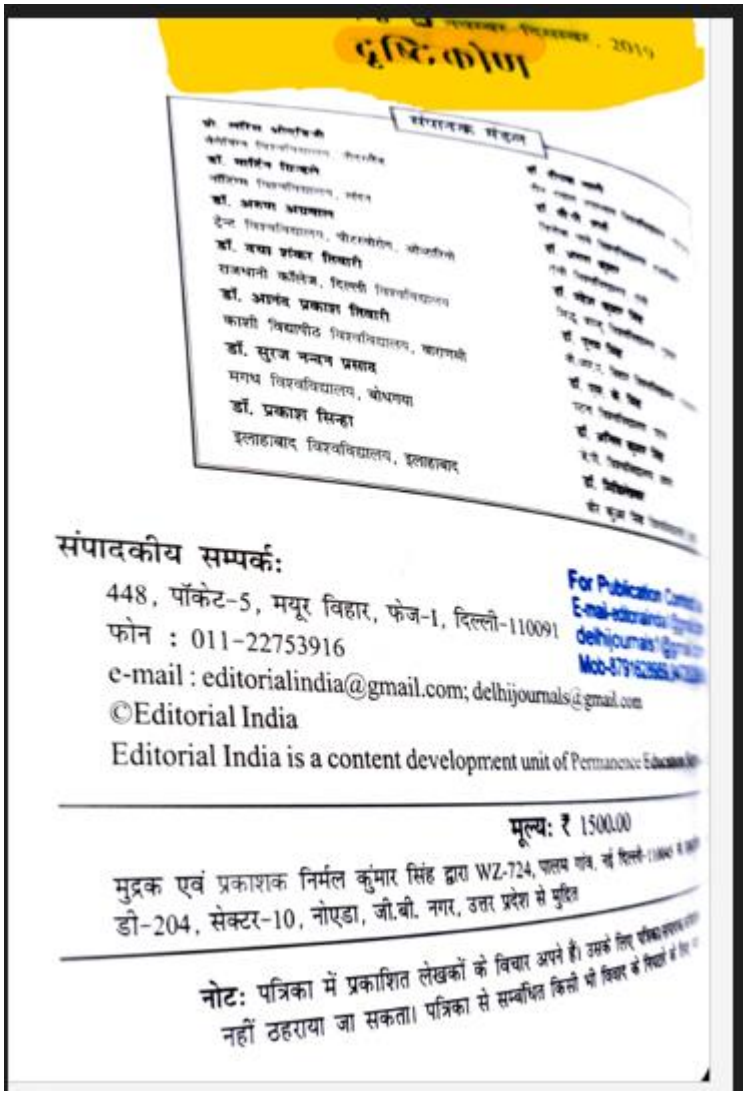

डॉ. रमा शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. सूरज नन्दन प्रसाद
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916
e-mail : editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education

मूल्य: ₹ 1500.00

मुद्रक एवं प्रकाशक निर्मल कुमार सिंह द्वारा WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली
डी-204, सेक्टर-10, नोएडा, जी.बी. नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका
नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए

भारतीय संस्कृति पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

डॉ० पूर्णिमा आर

सहायक प्रोफेसर, श्री शंकरा विद्यापीठ कॉलेज, वलयंचिरंगरा, पेरुंबावूर, केरल

मनुष्य जाति के विश्वास, ज्ञान ,आचरणादि का परिष्कृत और विकसित रूप संस्कृति है। संस्कृति शब्द संस्कृत के 'सम्' उपसर्ग के साथ 'कृ' धातु के जुड़ने से बना है जिसका अर्थ है परिष्कृत कार्य। पाणिनि के अष्टाध्यायी के अनुसार संस्कृति शिष्टाचार है और इसमें शब्दार्थ की अपेक्षा शब्दों का भावार्थ ग्रहण करना चाहिए जो विशेष और व्यापक है। संस्कृति के अंतर्गत मनुष्य की भाषा, खानपान रीति- रिवाज, दर्शन, ज्ञान, साहित्य, कला, मूल्य, व्यवस्था तथा जीवन शैली, धार्मिक अनुष्ठान, पर्व, त्योहार, विधि। निषेध, सामाजिक संस्थाएं , एक दूसरे के प्रति दृष्टिकोण और इनसे जुड़ी सारी चीजें आ जाती है। यह सब मिलकर एक विशिष्ट जीवन व्यवस्था बनाती है जिसे सांस्कृतिक धरोहर कहते हैं। विश्वास और मूल्य चेतना पर संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ता है। राष्ट्र, देश और काल से इसका गहरा संबंध है। संस्कृति की परिभाषा सर मोनियर विलियम्स ने इस प्रकार दी है 'प्रयत्न द्वारा कार्य की संपन्नता अथवा संस्कृति है'[1] हिंदी विश्व कोश के अनुसार संस्कृति उस समुच्चय का नाम है जिसमें ज्ञान विज्ञान, कला, नीति, विधि, रीति। रिवाज का समावेश रहता है।[2] हिंदी साहित्य कोश के अनुसार 'विभिन्न शास्त्रों, दर्शन आदि में होने वाले चिंतन, साहित्य, चित्रांकन आदि कलाओं एवं परहित साधन आदि नैतिक आदर्शों तथा व्यापारों को संस्कृति कहा जाता है।[3] रामधारीसिंह दिनकर के अनुसार संस्कृति का अर्थ मनुष्य काभीतरी विकास और उसकी नैतिक उन्नति है, एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार है और दूसरों को समझने की शक्ति है।[4] हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार संस्कृति विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है।[5] इस प्रकार कई विद्वानों ने विविध प्रकार से संस्कृति को परिभाषित किया है। संस्कृति का विकास बदलते भौतिक स्थितियों से मनुष्य के निरंतर संघर्ष, रोज के अनुभवों से शिक्षा और अगली पीढ़ियों तक अपने ज्ञान को नए समय के अनुसार संस्कार कर पहुंचाने की सामर्थ्य पर निर्भर है।[6]

भारतीय संस्कृति में वैचारिकता का अति महत्वपूर्ण स्थान है। चूंकि संस्कृति का संबंध मनुष्य के आंतरिक विचारों से है, यह एक अंतर्मुखी प्रक्रिया है जो मानव को ऊर्ध्वमुखी बनाती है। संस्कृति ही हमारे संस्कारों का परिष्कार करती है और मानव, संस्कारों के द्वारा ही उसकी सांस्कृतिक चेतना को निर्मित और प्रबल करता है। सांस्कृतिक चेतना से ही हमारी संस्कृति वास्तविक रूप में बढ़ती है। सांस्कृतिक चेतना मनुष्य को, संस्कार, अपने आचरण में दिखाने को प्रेरित करती है। यह व्यक्तिगत होते हुए भी समष्टिगत रूप ले लेती है। भारतीय संस्कृति वैश्विक संस्कृति है और इसकी सांस्कृतिक चेतना का मूलभूत आधार वसुधैव कुटुंबकम की भावना है इसकी यजुर्वेद भी पुष्ट करता है। 'वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सद्। यत्र विश्वं भवति एक नीडम्॥'[7] हमारी संस्कृति दो स्तरों पर काम करती है। भौतिक स्तर और अभौतिक स्तर पर। भौतिक स्तर पर संस्कृति मूर्त वस्तुओं से संबंधित होती है और उनका सरोकार मनुष्य के द्वारा बनाई गई वस्तुओं से होता है। अभौतिक संस्कृति में सभी तत्व आते हैं जिसका स्वरूप अमूर्त होता है जैसे आचार, विचार, भाषा, धर्म, रीतियां, कुरीतियां, संगीत, नृत्य आदि। भारतीय संस्कृति में सांस्कृतिक चेतना किसी न किसी रूप में मुखरित होती ही रहती है और इसके द्वारा हमें भारत के आध्यात्मिक चिंतन को वाणी देने का मौका मिलता है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी धार्मिक जड़ें है। सृष्टि के पीछे जो चिरंतन सत्ता विद्यमान है वही वास्तविक शक्ति मानी जाती है। यह अकृष्य शक्ति ही पर ब्रह्म्या परमात्मा कहलाती है। भारतीय संस्कृति में ब्रह्म, आत्मा की एकता को घोषित करता है।[8] परम तत्व ब्रह्म विश्व व्यापक है 9 और वही विश्वकर्ता एवं जगत का स्वामी है।[10] इसी सत्ता की सर्वत्र [11] अनुभूति प्राप्तकरना ही जीवन का परम लक्ष्य माना गया है।